bseb 9 class history notes Chapter 5 नाजीवाद

नाजीवाद

महत्त्वपूर्ण तथ्य -हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी में नाजीवाद का उत्कर्ष हुआ था। नाजीवाद एक आक्रामक विचारधारा थी जिसमें राष्ट्र की सर्वोपरिता को सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राज्यहित के आगे त्यागने तथा अर्थव्यवस्था पर राज्य के पूर्ण नियंत्रण की बात कही जाती थी। अत: जर्मनी के विरुद्ध हुए अन्याय का बदला लेने और जर्मनी के सम्मान एवं गौरव को लौटाने के लिए हिटलर के नेतृत्व में कई कार्य किए गए जिससे नात्सी क्रांति के रूप में देखा गया। नात्सी क्रांति के मुख्य कारण हैं-

(i) प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय से उत्पन्न असंतोष के कारण उसका शासक कैसर विलियम द्वितीय 10 नवम्बर, 1918 ई. को त्यागपत्र देकर हॉलैण्ड भाग गया। 11 नवम्बर, 1918 ई. को नई सरकार ने अपने नए नेता फ्रेडरिक एबर्ट के नेतृत्व में युद्ध-विराम संधि पर हस्ताक्षर
किया। इसके बाद संविधान सभा की प्रथम बैठक 5 फरवरी, 1919 ई. को हुई तथा वाइमर संविधान लागू हुआ। लेकिन नया संविधान युद्धोपरांत जर्मनी की स्थिति संभालने में असफल रहा।

(ii) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 28 जून, 1919 ई० को जर्मनी को वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया गया जो काफी कठोर तथा अपमानजनक थी। जर्मनी का अंग-भंग कर दिया गया। ऑल्सेस लॉरेन का क्षेत्र फ्रांस को लौटा दिया गया तथा जर्मनी स्थित 'सार क्षेत्र" 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दिया गया। आर्थिक क्षतिग्रस्त जर्मनी को क्षतिपूर्ति के नाम पर एक बहुत बड़ी राशि विजयी राष्ट्रों को देनी थी। औद्योगिक नगर छिन लिए गए। जर्मनी के उद्योग व्यापार पूरी तरह नष्ट हो गए। अतः सारे जर्मनी में असंतोष फैला हुआ था जिसने हिटलर के उदय का रास्ता तैयार किया।

(iii) मित्र राष्ट्रों द्वारा क्षतिपूर्ति की रकम के लिए हमेशा दबाव बना या जाता था। आर्थिक क्षतिपूर्ति के नाम पर जर्मनी पर 6 अरब 10 करोड़ पौंड का जुर्माना लगाया गया था जो कि आर्थिक तौर पर क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण अदा करना जर्मनी के लिए संभव नहीं था।

(iv) 1917 की रूसी क्रांति के बाद जर्मनी में भी साम्यवादी संगठनों का निर्माण होने लगा था जो वाइमर गणतंत्र को उखाड़ फेंकना चाहते थे। जिसकी वजह से जर्मनी का उद्योगपति, पूँजीपति एवं जमींदार वर्ग काफी भयभीत हो गया था। हिटलर ने साम्यवाद विरोधी नारा देकर इस
वर्ग की सहानुभूति भी अपने पक्ष में कर ली। अतः प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जर्मनी में नाजीवाद अर्थात् हिटलर के उदय के लिए मूलरूप से जर्मनी की तात्कालिक स्थिति जिम्मेवार थी। चारों ओर फैले अराजकता एवं निराशा के वातावरण के कारण जनता वैकल्पिक नेतृत्व के बारे में सोच रही थी। हिटलर ने जनता से खुशहाली तथा राष्ट्र के गौरव की पुर्नस्थापना का वादा किया तथा जनता ने अपना भविष्य उसके हाथों में सौंप दिया। हिटलर एवं उसके कार्य
एडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल, 1889 को ऑस्ट्रिया के ब्रौना नामक शहर में हुआ था। प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में वह जर्मनी की तरफ से लड़ा था तथा वीरता के लिए उसे आयरन क्रॉस मिला था। युद्ध के बाद वह 'जर्मन वर्कस पार्टी' का सदस्य बना तथा धीरे-धीरे वह
इसका नेता बन गया। उसकी नीति थी कि अफवाहों को इतना फैलाओ कि वह सत्य प्रतीत होने लगे। जर्मन प्रदेश पर फ्रांस का आधिपत्य हो जाने पर 1923 ई० में उसने वाइमर गणतंत्र के खिलाफ विद्रोह किया पर उसे बंदी बना लिया गया जहाँ उसने जेल में अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा
'मीनकैम्फ' की रचना की। 1924 ई. के अंत में उसे रिहा कर दिया गया। रिहा होने के बाद उसने 'स्वास्तिक' चिह्न को अपनी पार्टी के प्रतीक के रूप में ग्रहण किया और अपनी नाजी पार्टी का गठन नए सिरे से किया। 1924 ई० में

https://www.evidyarthi.in/

जर्मनी के निम्न सदन के चुनाव में जहाँ नाजी पार्टी को 32स्थान मिले थे वहीं 1928 के चुनाव में यह घटकर केवल 12 रह गया। इसी समय 1929 ई. को प्रारंभ हुए मंदी ने हिटलर को नया मौका दिला । हिटलर ने परिस्थिति का लाभ उठाते हुए वाइमर गणतंत्र वर्साय की संधि तथा यहूदियों के खिलाफ आग उगलना शुरू कर दिया। अतः मध्यवर्ग तथा नौजवान उसके प्रबल समर्थक बन गए। 1930 ई. के चुनाव में उसे 107 सीटें मिली तथा 1932 ई. के चुनाव में 230 सीटें मिलीं। राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने 30 जनवरी 1933 में हिटलर को चांसलर मनोनीत किया। अतः सत्ता प्राप्त करते ही उसने चुनाव की घोषणा कर दी तथा ऐसी व्यवस्था की कि केवल नाजी पार्टी के लोग ही चुनाव जीत सके। इस प्रकार जर्मन गणतंत्र की समाप्ति हुई तथा नात्सी क्रांति की शुरुआत हुई, जिसे हिटलर ने 'तृतीय राइख' का नाम दिया। अगस्त 1934 में हिडेनबर्ग की मृत्यु के बाद चांसलर तथा राष्ट्रपति के पद को मिलाकर एक कर
दिया गया। अब हिटलर जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया।

नाजीवादी दर्शन

(i) नाजीवाद उदारवाद तथा लोकतंत्र का कट्टर विरोधी था। अत: प्रेस तथा वाक् अभिव्यक्ति पर प्रतिबंध लगा दिया गया। विरोधी दलों का सफाया कर दिया गया। शिक्षण संस्थाओं तथा जनसंचार पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। इस प्रकार जर्मनी में लोकतांत्रिक आवाज को दफन
करने का प्रयाल किया गया।

(ii) हिटलर ने समाजवाद के विरुद्ध आवाज बुलंद किया इसीलिए उसे जर्मन पूँजीपतियों को अपनी ओर मिला लिया। अतः हिटलर को इंग्लैंड तथा फ्रांस की ओर से भी समर्थन मिला जिसके कारण उसका मनोबल बढ़ता गया।

(iii) नाजीवादी दर्शन के अनुसार सब कुछ राज्य में ही समाहित है। अर्थात् राज्य के भीतर ही सब कुछ है। राज्य के बाहर कुछ नहीं है।

(iv) जर्मनी में प्रारम्भ से ही उग्र राष्ट्रवाद एवं सैनिक तत्व की परंपरा रही है। हिटलर ने जर्मनी के इस मनोवृत्ति का लाभ उठाया तथा अपने आक्रामक बातों से पूरे जर्मनवासियों को अपमान का बदला लेने के लिए मानसिक स्तर पर तैयार किया।

(v) नाजीवाद शासक को निरंकुश शासन की शक्ति प्रदान करता है। सत्ता में आते ही उसने गुप्तचर पुलिस का गठन किया। विरोधियों के दमन के लिए विशेष कारागृह की स्थापना की, समाजवादियों का राजनैतिक जीवन समाप्त कर दिया। अतः जर्मनी में एक ही नेता सर्वेसर्वा बन गया था-हिटलर।

(vi) नाजीवादी दर्शन में सैनिक शक्ति एवं हिंसा को सर्वोपरि माना जाता था। इस प्रकार जर्मनी में फैले असंतोष का फायदा हिटलर ने उठाया। उसने जर्मनी को यूरोप की औद्योगिक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। लेकिन उसने अपनी शक्ति का प्रयोग नकारात्मक दिशा में किया।

नाजीवाद का प्रभाव-

(i) स्वतंत्रता विरोधी भावनाओं को प्रोत्साहन मिला।

(ii) सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत कोआघात पहुँचा।

(iii) साम्यवाद विरोधी आंदोलनों में तेजी आई।

(iv) यूरोप में तुष्टिकरण की नीति का प्रचलन हुआ।

(v) द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) की शुरुआत हुई।

हिटलर की विदेश नीति के मूल सिद्धांत थे-

(i) वर्साय संधि को भंग करना,

(ii) सारी जर्मनी को एक में संगठित करना,

(iii) साम्राज्य का विस्तार करना,

(iv) साम्यवाद के प्रसार को रोकना।

इनकी प्राप्ति के लिए निम्नलिखित कदम उठाए-

https://www.evidyarthi.in/

(i) सर्वप्रथम 1933 में जर्मनी ने राष्ट्रसंघ की सदस्यता छोड़ दी।
(ii) 1935 में हिटलर ने वर्साय संधि की नि:शस्त्रीकरण संबंधी सभी धाराओं को तोड़कर जर्मनी को वर्साय की संधि से मुक्त करवाया।
(ii) हिटलर ने 1934 में पोलैंड के साथ दस वर्षीय अनाक्रमण संधि की जिसके अंतर्गत वे एक-दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं करेंगे।
(iv) जून 1935 में जर्मनी तथा ब्रिटेन में यह समझौता हुआ कि जर्मनी अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ा सकता है बशर्ते कि वह अपनी नौसेना 35 प्रतिशत से अधिक ना बढ़ाए।
(v) हिटलर ने इटली की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया तथा इस प्रकार रोम-बर्लिन धुरी का
(vi) 1936 ई० में साम्यवादी खतरों से बचने के लिए जर्मनी, इटली एवं जापान के बीच कामिर्टन विरोधी समझौता हुआ जो बाद में धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
(vii) हिटलर जर्मन भाषा तथा जाति के लोगों को एक सूत्र में बाँधना चाहता था। अतः उसने सर्वप्रथम आस्ट्रिया को अपने साम्राज्य में मिला लिया। इसके पश्चात 1938 के म्यूनिख सम्मेलन में सुडेटनलैंड भी जर्मनी को दे दिया गया लेकिन वह तो पूरे चेक गणराज्य को जर्मनी में मिला लेना चाहता था। अतः 1939 में उसने चेक गणराज्य पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने मेमेल बंदरगाह पर भी आक्रमण कर दिया ।
(viii) पोलैंड को बाल्टिक सागर तक पहुँचने के लिए जर्मनी का कुछ भू-भाग पोलिश गलियारे के रूप में दे दिया गया। इसी गलियारे की माँग पर 1 सितम्बर 1939 को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया तथा द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत हुई। प्रारंभ में तो जर्मनी को आशातीत सफलता मिली लेकिन बाद में मित्र राष्ट्रों की शक्ति के आगे वह पराजित होने लगा। 1945 में जब विजयी सेनाएँ बर्लिन पहुँची तो हिटलर अपने बंकर में आत्महत्या कर चुका था। इस प्रकार एका तानाशाही शासन का अंत हुआ।

https://www.evidyarthi.in/